

वैराग्यनी व्यवहारिकता पर विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. नेहल दवे

आसिस्टन्ट प्रोफेसर, लडुलीश योग युनिवर्सिटी, अमदावाड -

<https://vidwan.inflibnet.ac.in/profile/340490>, nehaldca08@gmail.com, 9427164478

वैराग्य नो सायो अर्थ मारा माटे ये छे के स्टिभ्युलस अथवा उत्प्रेरको होवा छतां मनमां ये वस्तु, स्थिति, व्यक्ति के संसारनी उपस्थिति होवा छतां येमां सहजता के असहजता, त्याज्य अथवा ग्राह्य, प्रेय अथवा श्रेय, योग्य अथवा अयोग्य नी स्थिति न होय. याहे कामेच्छा होय के लोगेच्छा होय, ये उपस्थित होवा छतां येनी उपस्थिति के अनुपस्थितिनी भाव न होय ये ज वैराग्य छे. जेम येक बाणकनी सामे जो कोह नञ्ज थाय अथवा संसारनां सुभो मुडी दे, तो पण येनां माटे कशुं महत्त्वनुं नथी, तेम ज मारे संसारनी बधी कामनाओ प्रत्ये वैराग्य मेणवी येनी उपस्थिति अने अनुपस्थितिथी परे जवुं छे.

हुं अमुकवार अनुभवुं छुं के संसारथी दूर भागवानां प्रयासमां कदाय संसार वधु ने वधुं मारामां व्याप्त थई रह्यो छे. कारण के मने संसारनी ये वस्तुओमां हजु पण रुचि छे, जे मारां डोपामाधनने रिलिज करवामां मदद करे छे अने ये मने विविध सावोने वहेता राभवानी छच्छा करावे छे, जे मारी संसारमां रहेवानी रुचि वधारे छे. परन्तु संसार अेक अेवी माथा छे, जे अयोग्य अने नश्वर जाणाता पण अमुकवार नाना संकल्प करवा माटे प्रेरे छे. जेथी थोडी वार माटे पण भरुं, पण ये वैराग्यनो त्याग करीने संसारनी अयोग्य अने नश्वर वस्तु/व्यक्ति/परिस्थिति ने पामवानी छच्छा थई आवे. परन्तु आमां केवी अनुठी वात छे के अेक पले आ संकल्प थतां ज मारी क्रियाओ ये संबंधित थवा लागे छे अने क्रियाओ करता करता आत्मविश्लेषणनी प्रक्रियामां ज जण्णुं आवे छे के आ तो संसार छे अने आनी पाछण भागवामां के कोहपण प्रकारनी क्रिया करवामां कोह सार नथी.

वैराग्य कोह पामवानी वस्तु नथी. कोह व्यक्ति कोह क्रिया के साधनाथी वैराग्य तो प्राप्त न ज करी शके. भले ते वैराग्य प्राप्त करवा माटे धणां उपायो करे. ये उपायो मात्र वैराग्य तरङ्ग जवानां संकेतो होई शके अथवा मार्गो होई शके. परन्तु स्वयं वैराग्य तो पूर्णतः अव्यक्त ज छे. जो कोह वैराग्यने साधकनी क्रिया-कलापथी आंकवानो प्रयत्न करे, तो येनांथी महाभूर्ण कोह छे ज नही. मानो के तमे कोह साधकनी सामे अत्यन्त स्वादिष्ट अने आकर्षक भोजन मुक्युं अने ये साधके येनां स्थाने सामान्य भोजन अथवा सात्विक भोजन लेवानुं स्वीकार्युं, तो ये स्वादिष्ट भोजन प्रत्ये येनी वैराग्यताने नथी भतावतुं. ये तो ये सत्य तरङ्ग संकेत करे छे के आ साधक स्वादिष्ट अने सात्विक भोजननी वच्ये लेद करे छे अने प्रयास करीने सात्विक भोजन तरङ्ग जुके छे. ये वात शतप्रतिशत सत्य छे के ये साधक पोतानां सत्वनी रक्षा माटे जागृक छे अने वैराग्य तरङ्ग ये जवा माटे कटिबद्ध छे. परन्तु येने वैराग्य थई गयो छे ये कोह रीते सिद्ध थतुं नथी. आवी ज रीते कोह पण साधक के साधिका विपरीत लिंग तरङ्ग जता पोताने रोके छे, परन्तु ये मात्र वैराग्य तरङ्ग जवानो अेक संकेत छे, स्वयं वैराग्य नही. उक्त वचनोथी हुं प्रयासोने व्यर्थ नथी सिद्ध करी रह्यो, पण ये समजवानो प्रयास करी रह्यो छुं के कोह क्रिया के स्वभावथी वैराग्यनुं आकलन न करी शकाय. वैराग्य स्वयम् अेक दिव्य अने अद्वितीय स्थान छे, ज्यां संसारनी अनुपस्थिति अने उपस्थिति गौण थई जाय छे. मारे ये वैराग्य तरङ्ग पोताने लई जवो छे. जे कदाय मारा वैराग्य तरङ्गनां प्रयाणने अवश्य भतावे पण वैराग्यनो कोहपण रीते साक्षी न बनी शके.

तो ज्यारे संसार तरङ्ग जवानी छच्छा थाय, तो अर्थ छे के संसार अने परमात्मा वच्ये हजुं मारा मनमां लेदवृत्ति छे. आनो अर्थ ये नथी के, संसारनी नश्वर वस्तुओ/व्यक्तिओ/परिस्थितिओ ने पामवानो अने धंश्वरने पामवानो प्रयत्न अेक ज वात छे. पण आनो अर्थ ये छे के संसार कोह रीते उपस्थित होय, तो पण धंश्वर प्रत्ये जवानां प्रयत्नो ओछा न

थाय अने संसार होवा अथवा न होवा तरफ़ कोइ ध्यान न रहे. मात्र ऐकलक्ष्य अथवा ऐकलक्ष्ति अथवा ऐकश्रद्धा होय
भाकी बधानुं होवुं के न होवुं महत्त्वपूर्ण न होय. जो आ रीते संसारमां रहेवुं केहवाय तो मने वांधो नथी. भाकी संसारने
पोतानां अंतःकरणमांथी पूर्णपणे उभाडी केंकवानी घेलछा पाणवाने बढले ऐ ईश्वर तरफ़ जवानी पूर्ण प्रबलताने
पाणवी मने वधुं योग्य जणाय छे.

वैराज्य ऐक ज साधन छे, जे ईश्वरानुभूति तरफ़ लई जई शके छे. परन्तु हुं मारा वर्तनथी मारा वैराज्यनुं मापन करवा
मांगतो नथी. वैराज्य ऐक ऐवुं लक्ष्य छे, जे पोतानी उपस्थितिने प्रति पण वैराज्य धारण करे छे. आ शब्दी समजवा
कठिन छे, पण वास्तविकता तो ऐ ज छे के वैराज्य पोतानी उपस्थिति प्रति पण वैरागी छे. जो कोइरीते वैराज्यनी
उपस्थितिनुं भान थई पण जाय ऐम मानीऐ, तो पण वैराज्य स्वयं ऐ ईश्वर प्रति संकेत करीने पोतानी उपस्थितिने
नकारी देशे अथवा तो वैराज्यनां ऐवां इवामां साधकने लई जशे, ज्यां वैराज्य ज होय पण ऐ वैराज्यनां इवामां मात्र
ईश्वर प्रकाश सिवाय कशुं देमाय ज नही. आम अमूर्तने मूर्त करवानी छ्यछा पण न करे. जे वैराज्य अमूर्त छे, ऐ ऐनां
स्थाने रहे अने ईश्वर तरफ़ लई जवानुं कार्य करे ऐ ज वैराज्य पराकाष्ठा कही शकय.

जो वैराज्य आत्मसाक्षात्कारनो ऐक संकेत मात्र कहीऐ, तो आ मार्ग पर लागेला ऐवा संकेतो जेवुं छे, जे पोते मार्ग पर
रहीने लोकोने घर सुधीनो मार्ग बतावे छे, लोकोने सुरक्षित रहेवानी प्रेरणा आपे छे अने लोकोने स्वेच्छाऐ निर्णय
लेवानी स्वतन्त्रता पण आपे छे, परन्तु पोते क्यारेय कशे पहोयता नथी. ऐमने तो त्यां रहीने ज पोतानुं लक्ष्य सिद्ध
करी लीधुं छे. हवे मात्र ऐ संकेतनां रुपमां लोकोने ऐ आत्मसाक्षात्कारनां मार्गो दारे छे. जो कोइ वैराज्यनी अवगणना
करीने आत्महत्या करे, तो पण ऐ वैराज्य त्यां ज रहीने पोतानां कार्यमां लागेलो रहे छे. मनुष्य धरे पहोये के परलोक
ऐ मार्गमां स्थित संकेतनो प्रभावित करता नथी. तेवी ज रीते साधक आत्मसाक्षात्कार तरफ़ जाय के आत्महत्या तरफ़ ऐ
वैराज्य सर्वदा मार्ग सिंधतो रहे छे अने पोतानी के बीजानी उपस्थिति अने अनुपस्थिति प्रति वैरागी ज रहे छे.

संसारमां कोइ व्यक्ति क्रिया के प्रतिक्रियाथी परे जईने मात्र स्वकर्तव्यनुं पालन कर्या करे, तो वैराज्यनुं अनुवर्तन कही
शकय. जो सुभ अने दुःखमां पोते ईश्वर तरफ़ संकेत राभीने बधुं जोया करे, तो पण वैराज्यनां मार्गनो संकेत कही
शकय. भोग्य अने त्याज्यमां जे भाव रहेलो छे, ते मात्र ईश्वर तरफ़ जवानी ऐनी दृढनिष्ठाने दर्शावे, तो ऐ वैराज्यनां
राजमार्ग पर जवाने योग्य तो गणी ज शकय. आ संसार कदाय स्वयं वैराज्यनो पाठ भणायवे छे अने पोते वारंवार
परिवर्तन करीने समजववानो प्रयास करे छे के हे जेव! वैराज्य कर. तारी जाते ज जोई ले के हुं संसार अत्यन्त
परिवर्तनशील छुं अने जे आजे तने सुभ आपनारी वस्तु/व्यक्ति/परिस्थिति छे, ऐ काले शुं कदाय बीजो ज क्षणे दुःख
अने यातनाओ आपे छे. आथी ज तू वैराज्यनो पाठ भणाय ले अने वैराज्यनी ज उपासना कर. पण मनुष्य तो घणीवार
पोकारी पोकारीने कहेला वैराज्यनां उपदेशोने प्रति उदासीन रहे छे, तो संसारनां यकमां विद्यमान आ वैराज्यनां पाठने
केवी रीते ध्याने लई शके? ऐनी वृत्ति तो मात्र अने मात्र वैराज्यनुं नाटक करवानी अने ऐनी आऽमां संसारने
माणवानी ज छे.

“हुं तो सामे वाणाने संभणायवी दई, जो कशुं जोट्टे करे” आ वाक्य मे अनेकवार विभिन्न लोकोनां मुभेथी सांभण्युं छे. ऐ
व्यक्ति मारा संबंधी होय, मित्र होय के बोस अथवा सहकर्मचारी. अनेकवार मे पण आ वाक्यनो प्रयोग कर्यो छे. बधाने
बीजाने संभणायवी देवामां जे आनंद मणे छे ऐ कदाय बीजो कोइ स्थितिमां नथी मणतो. कारण के ऐ समये ऐ व्यक्ति
पोते वैरागी अथवा सत्य (ईश्वर)नां संकेतकनो किरदार निभावे छे. तो ऐ किरदार करवामां तो ऐने घणो आनंद थाय
छे परन्तु अन्ते ऐक अस्मितानो जेम ऐने पण पोतानां वास्तविक जिवनमां अने साया शब्दीमां कहीऐ तो पोतानी
साथी वृत्ति तरफ़ पाछुं आववुं ज पडे छे. पछी ऐ उछीनो लीघेलो वैराज्य द्वेष अने अस्मितानो साक्षी मात्र बनी रहे
छे.

उक्त वचनोथी मे ऐ शीज्युं छे के जो ऐक नाटक करवामां वैराज्य आटलुं सुभ आपतुं होय, तो वास्तविक वैराज्य केटलो
आनन्दमय हशे. ऐ वैराज्यथी द्वेष अने अस्मिताने जेवा दुष्परिणामो पण न जन्मे अने चिरकालीन आनन्दनी प्राप्ति
पण थई जाय. आ वैराज्य साये मने अमुकवार ईश्वर सरभो लागे छे. जेनो आश्रय लेता ज ईश्वरानुभूतिनी निश्चितता
थई जाय छे. पण ऐ वैराज्य ऐवो वैरागी छे के ऐ समये पण ऐ ईश्वर तरफ़ जवानो संकेत करी दे छे. संसारनी प्रत्येक
परिस्थितिमां वैराज्य जोवानी वृत्ति अने वैराज्यनां संकेतनो समजवानी वृत्ति ज पर्याप्त छे, जे वैराज्यनां इवामां रहेला

એ દેદીપ્યમાન ઈશ્વરનાં સાક્ષાત્કાર કરી બતાવે.

ક્યાં આ સંસારની સામાન્ય ક્રિયાઓ, જેને સામાન્ય મનુષ્ય દૈનિક ક્રિયા માત્ર ગણે છે અને ક્યાં એ સંસાર દ્વારા અપાતો વૈરાગ્યનો પાઠ, જેને સમજવા માટે વૈરાગ્યની જ શરણ લેવી પડતી હોય છે. સાચે જ આ વૈરાગ્ય અત્યંત વૈરાગી છે, પોતાની ઉપસ્થિતિનું ભાન થવા ન દે અને પોતે એટલો મહત્ત્વપૂર્ણ છે કે એનાં વગર ઈશ્વરનો સાક્ષાત્કાર શક્ય પણ ન બને. આવા વૈરાગ્યને પામવા માટે મારે કોઈ પ્રયત્ન કરવા કે ન કરવા એ વિષે હું પોતે અવઢવમાં છું. પણ એટલું નિશ્ચિત છે કે એ વૈરાગ્યનાં સંકેતોને સમજવા માટે મારે સર્વદા તત્પર રહેવું છે.

વૈરાગ્યનો અર્થ નિષ્ક્રિયતા તો બિલકુલ નથી. કારણ કે સંસારથી વૈરાગ્યનો અર્થ થાય છે કે સંસારની એવી કોઈ વસ્તુ/વ્યક્તિ/પરિસ્થિતિ ને પ્રાપ્ત કરવામાં ઉદાસીનતા રાખવી, જે સંસારનાં દલદલમાં ધસાવ્યા જ કરે. જો આને સામાન્ય મનુષ્યનાં શબ્દોમાં કહીએ, તો વૈરાગ્ય એટલે કોઈ પ્રકારનો પ્રયત્ન જ ન કરવો અને કશું મળી જાય તો એને છોડી દેવું અથવા એની પરવા ન કરવી. જો વૈરાગ્ય પ્રયત્ન ન કરવાનો ઉપદેશ આપે છે, તો એ માત્ર સંસાર તરફ પ્રયત્ન ન કરવાનો ઉપદેશ જ આપે છે. ન કે પ્રયત્ન ત્યાગવાની વાત કરે છે. કર્તવ્ય અને ઈશ્વર તરફની દોટ માટે જ વૈરાગ્ય સંકેતો આપ્યા કરે છે. જીવનમાં ઘટી રહેલા પ્રત્યેક પરિવર્તનો સંકેત આપે છે કે વૈરાગ્ય ધારણ કર. મે વાંચ્યું છે કે ઘડી કી ટિક-ટિક જીવન પર વૈસે હી પ્રહાર કર રહી હૈ, જૈસે કોઈ લક્કઢહારા કુહાડી સે પેઢ પર... એમ જ સંસારનાં પ્રત્યેક પરિવર્તનો વૈરાગ્ય તરફ ધક્કે મારી રહ્યા છે. જો જાણીને એ સંદેશની અવગણના કરું, તો પણ ક્યારેક ને ક્યારેક એ વૈરાગ્ય પોતાનું કામ કરશે.

**अङ्गं गलितं पलितं मुण्डं दशनविहीनं जातं तुण्डम्।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं तदपि न मुञ्चति आशापिण्डम्॥**

ભલે ગલિત અને પલિત અવસ્થા સુધી વૈરાગ્યનાં સંદેશને ન સાંભળું, પણ દેહાવસાનથી તો બધો મોહ છુટી જ જશે. ચાહે એ ક્ષણવાર માટે છુટે. બીજા જન્મે ફરી વૈરાગ્ય પોતે સંકેત આપ્યા જ કરશે. એ સંકેતો કર્તવ્યપાલનનાં જ હશે. વાસ્તવિકતા એ પણ જણાય છે કે વસિષ્ઠ દ્વારા વર્ણિત આભ્યાન્તર કર્મ વૈરાગ્યને પ્રાપ્ત કરવાનો એક સરળ માર્ગ છે. આસનપ્રાણાયામાદિ ની ચર્ચા કરતો વસિષ્ઠ સંહિતા ગ્રંથ આમ તો હઠયોગનો ગ્રંથ મનાય છે. પણ મને તો એ રાજયોગનો ગ્રંથ લાગે છે. કારણ કે એ બધા યમાદિ ને બાહ્ય રીતે નહીં આભ્યાન્તર રીત કરવાની વાત કરે છે.

**जातस्य द्विविधौ ज्ञेयौ पन्थानौ वेदचोदितौ।
कर्मात्मकावुभावेतौ प्रवर्तकनिवर्तकौ॥१९॥
वर्णाश्रमाणां कर्मैव कामसंकल्पपूर्वकम्।
प्रवर्तकं भवेदेतत् संसारे वै प्रवर्तनात्॥२०॥
तदेव ज्ञानसंयुक्तं सर्वकामविवर्जितम्।
निवर्तकं भवेदेतज्जन्मनस्तु निवर्तनात्॥२१॥**

અર્થાત્, જીવમાત્ર માટે પ્રવર્તક અને નિવર્તક એમ બે પ્રકારનાં માર્ગો છે, જેનો બોધ વેદો આપે છે. સંસારમાં વર્ણાશ્રમીઓ માટે કામસંકલ્પપૂર્વક કરવામાં આવેલ કર્મ પ્રવૃત્તિ કરાવનાર જ હોવાથી પ્રવર્તક છે. પરંતુ એ જ કર્મોને નિષ્કામતાથી અને જ્ઞાનયુક્તપણે કરવામાં આવે, તો એ કર્માનુષ્ઠાનો પુનર્જન્મનાં ચક્રને તોડી નાંખે છે, માટે એ નિવર્તક માર્ગ છે. આ વાત ભગવાન શ્રીકૃષ્ણ ગીતામાં વારંવાર પુનરાવૃત્તિ સાથે વિવિધ ઉપાયોથી કહ્યા કરે છે.

**अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते। इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः॥१०.८
मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम्। कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च॥१०.८
तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्। ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते॥१०.१०**

अर्थात्, हुं ज आभा संसारनी उत्पत्तिनुं मूण कारणं हुं अने माराथी ज आ संसार प्रवृत्त थई रह्यो छे. आ जाएीने श्रद्धा अने लक्ष्ति युक्त बुद्धिमान लक्ष्ति माइं ज नित्य लजन कर्या करे छे. ऐम निरंतर मारां मनने परोवी राभनारा अने मारां ज प्राणोने अर्पण करनारा लक्ष्ति परस्पर मारी विभूतियोनो बोध आपीने अने कहीने सर्वदा संतुष्ट रहे छे, अने तेयो मुज परब्रह्मं ज निरंतर रभ्या करे छे. तेयो निरंतर मारां परोवायेला अने प्रेमपूर्वक माइं लजन करनारा लक्ष्तिने हुं बुद्धियोगनुं दान करु हुं अने ऐ बुद्धियोगथी ऐ मारा लक्ष्ति मने ज पामी जाय छे. भगवान स्वयं वैराग्यने ज पोतानां तरङ्ग आववानो ऐक मात्र मार्ग माने छे अन्यथा ऐमने वैराग्यने मुभ्य गण्णाववानी कोई आवश्यकता न हती. मामेकं शरणं ब्रज ऐ भले भगवान पोतानी तरङ्ग आववानुं आह्वान आपे छे, पण त्यां वैराग्यनो ज मार्ग मने जणाय छे. आभ्यान्तर कर्म करता करता जे पण बाह्य क्रिया-कलाप थाय ऐ निष्काम कर्म करवुं अने बधी ज क्रियाओ ईश्वर माटे करवानुं नाम ज वैराग्य छे.

यत्करोषि यदश्रासि यज्जुहोषि ददासि यत्। यत्पस्यसि कौन्तेय तत्करुष्व मदर्पणम्॥८.२७
शुभाशुभफलैरेवं मोक्षयसे कर्मबन्धनैः। संन्यासयोगयुक्तात्मा विमुक्तो मामुपैष्यसि॥८.२८

अर्थात्, हे अर्जुन! तु जे पण कर्म करे छे, भाय छे, यज्ञमां होमे छे, दान करे छे अने तप करे छे, ऐ बधुं मने अर्पण करी दे. ऐवुं करीने तारो कर्मबंधनोथी अने शुभाशुभ कर्मङ्गोथी पूर्णपणे छुटकारो थई जशे. आम तारी जातनी साथे ताइं सर्वस्व मने अर्पण करीने (संन्यासयोगनुं पालन करीने) पूर्णपणे मुक्त थयेलो तुं मने ज पामीश.

अग्रे वह्निः पृष्ठे भानुः रात्रौ चुबुकसमर्पितजानु।
करतलभिक्षः तरुतलवासः तदपि न मुञ्चति आशापाशः॥

संसार छोड्या पछी पण जो संसार न छुटे, तो योग्य न गणाय. जो वैराग्यनी साथी उपस्थिति थई जाय, तो संसार छोड्या पछी संसारमां रहेली तुच्छता तरङ्ग ध्यान न ज रहे. संसार छोडनारने ज संसार तरङ्गथी विरक्तिनुं सत्यापन (वेदिडेशन) जोईतुं होय छे, ऐनी आवश्यकता ज न रहे. वैराग्य कोई सिद्ध करवानो विषय नथी ऐ मात्र ईश्वर तरङ्ग जवानो प्रत्येक जिव माटे संकेत छे, ज मात्र चोक्कस रीते जोवाथी सिद्ध थाय छे. अतः ऐवा वैराग्य तरङ्ग जवुं छे, जेमां आत्मज्ञान थाय अने संसार तरङ्गथी सत्यापननी पण जंभना न रहे.

धैर्यं यस्य पिता क्षमा च जननी शान्तिश्चिरं गेहिनी,
सत्यं मित्रमिदं दया च भगिनी भ्राता मनःसंयमः ।
शय्या भूमितलं दिशोऽपि वसनं ज्ञानामृतं भोजनं,
होते यस्य कुटुम्बिनो वद सखे कस्माद्भयं योगिनः ।

जेनां पिता धैर्य, माता क्षमा, गृहिणी शान्ति, मित्र सत्य, भगिनी दया अने भ्राता मनःसंयम छे, आ उपरांत भूमि जेनी शैथ्या, सर्वे दिशाओ जेनुं वस्त्र अने ज्ञानामृत ज जेनुं भोजन छे, आवा कुटुंबी जनो वाजा योगीने कोनो लय होई शके?

संदर्भग्रंथो

- [1] श्रीमद्भगवद्गीता, गीताप्रेस
- [2] शंकराचार्य विरचित लज गोविंदम् - प्रकाशक - श्री रामकृष्ण मठ मैसूर, ISBN - 81-7823-246-4
- [3] वैराग्यशतकम् - भर्तृहरि
- [4] श्रीमद्भगवत्महापुराण - गीताप्रेस